

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का अध्ययन

शिखा सिंगला

शोधार्थी श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़

डॉ अनीता सिंह

शोध निर्देशका सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़

परिचय

भारत का एक समृद्ध सांस्कृतिक और पारंपरिक इतिहास है जो पूरी दुनिया को पता है। इसमें आर्यभट्ट, पाणिनि, चाणक्य और नालंदा और तक्षशिला जैसे प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्थान हैं। यह अर्थशास्त्र जैसे विज्ञान के प्रसिद्ध कार्यों की उत्पत्ति के लिए भी जाना जाता है, जिसने दुनिया को सामाजिक और राजनीतिक विज्ञान के कई पहलुओं और शून्य के आविष्कार को सिखाया। भारत को लंबे समय तक शिक्षा और सीखने के केंद्र के रूप में जाना जाता था, इससे पहले कि देश पर नियंत्रण पाने की कोशिश कर रही विभिन्न ताकतों द्वारा हमला किया गया। एक के बाद एक ताकतों से अपनी आजादी को सफलतापूर्वक जीतने के बाद, भारत ने ज्ञान के मंदिर के रूप में अपना स्थान खो दिया। हमने पश्चिमी तरीकों को अपनाया और उनकी शिक्षा और सीखने के आदर्शों को स्वीकार किया और तब से भारत में शिक्षा की पद्धति या प्रणाली में कोई नवाचार नहीं हुआ जिसे क्रांतिकारी कहा जा सके। भारत में शिक्षा प्रणाली में हुए बदलावों को कम से कम 'व्युत्पन्न' कहा जा सकता है। तेजी से पश्चिमीकरण और बदलाव के लिए समय न होने के कारण हमारे पास पश्चिमी शिक्षा प्रणालियों को स्वीकार करने और लागू करने और उनके अनुसार खुद को ढालने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा। हम व्यवस्थित शिक्षा प्रदान करने वाले पहले विश्वविद्यालय से विदेशियों द्वारा हमारे लोगों के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम तक पहुँच गए। गुरुकुल भारतीय स्वदेशी शिक्षा प्रणाली थी जो कभी हमारे देश में मौजूद थी। हमारे शास्त्रों और कथाओं में इसके बारे में बहुत कुछ लिखा गया है जो हमें इस प्रणाली के कार्य के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। यह एक आदर्श प्रणाली नहीं थी, इसने जातिवाद, लिंगवाद और उस समय मौजूद कई अन्य कलंकों का समर्थन किया। लेकिन शिक्षक ने छात्र के विकास के लिए जो दृष्टिकोण अपनाया, उसने बच्चे को निखारा और

उसके परिणाम स्वरूप बच्चे दुनिया के व्यापक ज्ञान और उनके साथ कौशल की एक विशाल विविधता से संपन्न हुए। भले ही यह प्रणाली राजाओं और साम्राज्यों के समय में मौजूद थी, लेकिन इसके आदर्श हमारी संस्कृति और परंपरा में गहराई से निहित हैं। शिक्षा को केवल जानकारी प्राप्त करने और विश्वासों के विकास तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें केवल ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन के प्रति अधिक समग्र दृष्टिकोण होना चाहिए। इसमें अनुभव से सीखना और शिक्षक से छात्र तक ज्ञान का प्रकाश पहुंचाना शामिल होना चाहिए। मास मीडिया, कम्प्यूटरीकरण और एक शिक्षक के अधीन 50 से अधिक छात्रों की ताकत के दिनों में, ये विचार असंभव लगते हैं। लेकिन केवल जानकारी ही नहीं बल्कि शिक्षा प्रदान करने का एक अधिक व्यवस्थित तरीका हो सकता है, जिसमें हमारे गुरुकुल प्रणालियों के आदर्शों को लेना और उन्हें हमारे लिए उपलब्ध वर्तमान सुविधाओं के साथ एकीकृत करना शामिल है, संक्षेप में दोनों दुनिया का सर्वोत्तम उपयोग करना। शिक्षा तकनीकों में परिवर्तन और तीव्र नवाचार की आवश्यकता आसन्न है। और इस विषय पर नए शोध बहुत कम हैं। पहले किए गए शोध से वर्तमान प्रणाली के कामकाज और चुनौतियों के बारे में जानकारी मिलती है, लेकिन नई प्रणालियों को विकसित करने के बारे में जनता की धारणा पर और शोध की आवश्यकता है।

1.1.0 शोध का औचित्य

भारतीय शिक्षा प्रणाली में वैदिक काल से वर्तमान तक कई परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों में जीवन कौशल और पाठ्यक्रम का प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है जो समाज के निर्माण की नींव बनाते हैं। ऐसे में वर्तमान में भारतीय और प्राचीन शिक्षा प्रणाली में प्राचीन वैज्ञानिक शैक्षणिक तरीकों, पाठ्यक्रमों और जीवन कौशलों का तुलनात्मक अध्ययन करने से वर्तमान शिक्षा प्रणाली के परिष्करण में सहायता प्राप्त हो सकेगी।

1.1.2 शोध का समस्या कथन

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का अध्ययन प्राचीन वैदिक कालीन शिक्षा की अनेक विशेषताएं आधुनिक समय में पूर्ण रूप से प्रासंगिक तथा उपयोगी है आदर्शवादिता, अनुशासन, गुरु शिष्य संबंध, शिक्षा व्यवस्था, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम तथा सरल जीवन शैली आदि विशेषताओं को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समावेश करके अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

1.1.3 अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षा एक समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और हर समय की सोच और संस्कृति के अनुसार शिक्षा की प्रणाली में बदलाव आता रहता है। वर्तमान युग में भी हमारी शिक्षा प्रणाली में सुधार होते रहते हैं तथा विभिन्न संस्कृतियों और समय की शैली और तरीके का अध्ययन करना हमें वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा को समझने में मदद

कर सकता है । प्राचीन भारतीय शिक्षा का उद्भव वेदों से माना जाता है यह विश्व का सर्वाधिक पुराण साहित्य है । आदिकाल में वेदों का ज्ञान लिपिबद्ध नहीं था बहुत समय बाद ऋषियों के द्वारा वेदों को लिपिबद्ध किया गया । वेद शब्द की उत्पत्ति विद धातु से हुई है जिसका अर्थ ज्ञान प्राप्त करना है वेदों को भारतीय जीवन दर्शन का स्रोत माना जाता है । वेदों को अनादि माना जाता है वेदों में सांसारिक व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में मानव के लिए आवश्यक समरूप ज्ञान संग्रहित है । वास्तव में वेद शब्द अपने आप में इतना व्यापक तथा गहन अर्थ वाला है कि विश्व की समस्त ज्ञान इसमें समाहित हो जाता है । भारतीय शिक्षा का आदि स्रोत वेद ही था तथा इन्हीं के अनुरूप भारतीयों का संपूर्ण जीवन दर्शन निर्धारित हुआ वैदिक कालीन युग में वेदों का ज्ञान भारतीयों के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया था तथा यह ज्ञान आज भी भारतीयों के जीवन दर्शन में विभिन्न कृतियां प्रथाओं और परंपराओं के रूप में विद्यमान है ।

“सा विद्या या विमुक्तये ”

वैदिक कालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य आत्मोन्मयुदय संबंधित व्यक्तित्व गुणों, को विकसित करना है। वैदिक शिक्षा प्रणाली वसुदेव कुटुंबकम की अवधारणा पर आधारित थी। वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था में गुरु का स्थान ईश्वर से भी श्रेष्ठ माना गया है। कबीर दास जी ने गुरु के संदर्भ में इस प्रकार कहा है।

“ गुरु गोविंद डाउ खड़े काके लागूं पाय ।

बलिहारी गुरु अपने गोविंद दिया बताय ।”

प्राचीन शिक्षा पद्धति में विद्यार्थी गुरुकुल जाकर विधा अध्ययन करते थे। अपने गुरु की आज्ञा का पालन करते थे। इसका उदाहरण रामायण महाभारत आदि में देखने को मिलता है। वैदिक काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य यह था कि बालक के मन में ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता की भावना का विकास करना था। जैसे व्रत, यज्ञ , उपासना, धार्मिक उत्सवों को मनाना, नित्य प्रार्थना आदि । वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य छात्रों के व्यक्तित्व का स्वस्थ विकास एवं श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण करना था। शिक्षा के द्वारा उनके स्वभाव में परिवर्तन लाकर नैतिक प्रवृत्तियों का विकास किया जाता था एवं छात्रों का सर्वांगीण विकास किया जाता था। जैसे – आत्म सम्मान की भावना, आत्म संयम ,आत्म त्याग स्वतंत्र विचारों की अभिव्यक्ति आदि पर बोल दिया जाता था। जबकि वर्तमान समय में आधुनिकीकरण एवं भौतिकता पर अधिक बल दिया जाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली छात्र केंद्रित है। सम्पूर्ण शिक्षा का केंद्र विद्यार्थी और विद्यालय तक सीमित है। विद्यार्थी के लिए शिक्षा किताबी भी ज्ञान तक ही सीमित रह गई है। वर्तमान समय में विद्यालयों को केवल कमाई का साधन माना जाता है। वर्तमान समय की शिक्षा में विद्यार्थी के न तो चरित्र निर्माण पर जोर दिया जाता है और न ही उसके व्यक्तित्व निर्माण पर।

वर्तमान में औद्योगीकरण के तीव्र विकास के कारण शिक्षा प्रणाली व उसका लक्ष्य दोनों ही परिवर्तित हो गए हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली, वैदिक शिक्षा पद्धति से अलग है। आज की शिक्षा पद्धति का जो प्रमुख दोष उभरकर सामने आया है वह है इसकी एक आयामी स्वरूप। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि मानव व्यक्तित्व के मूलतः दो पक्ष हैं— बाह्य (भौतिक पक्ष), आन्तरिक (आध्यात्मिक पक्ष) बाह्य पक्ष का सम्बंध भौतिक उपलब्धियों में है, जैसे— विज्ञान व प्रौद्योगिकी, जबकि आन्तरिक पक्ष का सम्बंध मूल्यों से है। आज की शिक्षा प्रणाली केवल बाह्य पक्ष पर ही बल देती है इस प्रकार आन्तरिक पक्ष उपेक्षित होता जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा के बाह्य विन्यास तो हो रहा है परन्तु आन्तरिक व्यतिक्रम उत्पन्न हो रहा है। इस प्रकार आज की शिक्षा प्रणाली न तो मूल्य आधारित है, न ही मूल्य रहित, अपितु मूल्य निरपेक्ष है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली, इस प्रकार से मूल्यक्षरण का एक प्रमुख कारण है। तीव्र औद्योगीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप एक उपभोक्तावादी समाज का निर्माण हुआ है। यह उपभोक्तावादी समाज, आवश्यकता आधारित समाज न होकर लोभ आधारित समाज होता है। आवश्यकता की तो सीमा है पर लोभ की कोई सीमा नहीं है। लोभ के वशीभूत व्यक्ति अपना विवेक खो देता है तथा इस प्रकार वह व्यक्ति तथा प्रकृति दोनों का दोहन प्रारम्भ कर देता है। इस संदर्भ में महात्मा गाँधी का यह कथन काफी प्रासंगिक है— यह पृथ्वी सभी की जरूरतों को पूरा करने के लिए तो पर्याप्त है परन्तु सभी के लोभ को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है। लोभ आधारित समाज में तीन प्रमुख समस्याएँ उभर कर सामने आती हैं।

1. अहंकेन्द्रित भाव का विकास।
2. स्वकेन्द्रित समाज का निर्माण।
3. व्यक्ति को संवेदनाहीन बना देना।

इन सभी समस्याओं का दुष्परिणाम यह होता है कि समाज में कुप्रवृत्तियाँ चरम पर हो जाती हैं। यद्यपि इन्हें रोकने के लिए राज्य स्तर पर कठोरतम कानून बनाए जाते हैं परन्तु कानून भी इन्हें रोकने में असमर्थ हैं। क्योंकि ये सारी समस्याएँ बाह्य न होकर आन्तरिक होती हैं। जिसका सम्बन्ध मानवीय मूल्यों से है। इस प्रकार की प्रवृत्ति समाज में मूल्य संकट की समस्या उत्पन्न करती है।

वस्तुतः वर्तमान सामाजिक समस्याओं का उपर्युक्त समाधान वैदिक शिक्षा प्रणाली में उपलब्ध है। वैदिक शिक्षा प्रणाली जो मूल्य आधारित प्रणाली है संपोष्य विकास को बढ़ावा देती है। संपोष्य विकास का अर्थ है कि बाह्य व आन्तरिक दोनों पक्षों में संतुलन। मानव मशीन न होकर एक भावात्मक प्राणी है जिसका सम्बन्ध मानवीय मूल्यों से है। जैसे— प्रेम, दया, करुणा, सहिष्णुता, समाभाव, परोपकार इत्यादि। यह भावात्मक पक्ष ही हमें मानवीय मूल्यों के प्रति सजक एवं संवेदनशील बनाता है।

शिक्षा ही किसी समाज की भावी स्वरूप व दिशा का निर्धारक होता है। अतः आवश्यकता है कि समाज का स्वरूप नैतिक व सुव्यवस्थित हो, बच्चों को मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान की जाय। उपर्युक्त वर्णित लोभ केन्द्रित समाज, अहंकेन्द्रित समाज इत्यादि समस्या के समाधान वैदिक ऋचाओं में उपस्थित हैं—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन मुंजीथा, मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

अर्थात् इस गतिशील जगत् में जो कुछ भी है, वह ईश्वर या ईशावास्यमय है। अतः त्यागपूर्वक भोग करो लालच मत करो, यह धन किसका है ?

वर्तमान में समाज के स्वार्थी, स्वकेन्द्रित होने की समस्या तथा अपने व पराए का भेद समाप्त हो इसके लिए वैदिक ऋषियों ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा का प्रतिपादन किया जिसके अनुसार सम्पूर्ण पृथ्वी ही परिवार के रूप में परिभाषिता की गयी है।

अयं निजः परोवेतिगणना लघु चेतसाम् । उदारचरित्रानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

अर्थात् यह अपना है तथा यह दूसरे का ऐसा विचार तुच्छ विचारधारा वाले लोग करते हैं। उदारचरित्र लोगों के लिए तो सम्पूर्ण पृथ्वी ही एक परिवार के समान है। उल्लेखनीय है कि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य जिसे भूमण्डलीकरण का युग कहा जा रहा है, के लिए ऐसी भावना का विकास एक समरसतापूर्ण भविष्य को उद्घाटित करता है। वर्तमान में जब वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ने की होड़ सी मची हुई है, तथा विश्व के देश राष्ट्रवाद तथा भूमण्डलीकरण के द्वन्द्व में फँसे हुए हैं तो इस समय विश्व बन्धुत्व तथा वसुधैव कुटुम्बकम् रूपी आदर्श निःसन्देह इन समस्याओं का समुचित हल प्रदान कर सकते हैं। वेदों में महर्षियों ने सबको साथ लेकर चलने, सबके विकास व सबके उत्थान की अवधारणा विकसित की है।

ॐ सहनाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनाधीतमस्तु। मा विद्विषावहै॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थात् हे प्रभु हम सब की रक्षा करें। हम सबका पोषण करें। हम सबको शक्ति प्रदान करें। हमारा ज्ञान तेजमयी हो तथा हम किसी से द्वेष ना करें। साथ ही साथ वर्तमान में एक प्रमुख समस्या स्वयं को श्रेष्ठतर के रूप में स्थापित करने की है। इससे कहीं न कहीं अन्य विचारों के प्रति हमारे मन में हीन भावना का जन्म होता है। वैदिक शिक्षा द्वारा हम एक श्रेष्ठ मार्ग प्राप्त करते हैं कि हमें सदैव अच्छे विचारों को ग्रहण करने के लिए तैयार रहा चाहिए तथा उसे हृदयंगम करते हुए अभ्युदय हेतु प्रयत्नशील रहना चाहिए।

ॐ असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा मृतम् गमय ॥

अर्थात् हमें असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। हमें मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

वर्तमान में युवाओं के समक्ष एक बड़ी समस्या मानसिक उद्विग्नता का है। आज के भौतिक युग में युवा असन्तोष, अराजकता एवं किकर्तृतव्यविमूढता के जाल में फँसा हुआ है। आज युवाओं में धैर्य की कमी देखी जा रही है। जिसके कारण युवा अपना सन्तुलन खो बैठा है तथा आत्महत्या जैसे जघन्य अपराध को अपना हथियार बना जीवन लीला को समाप्त कर बैठ रहा है। इसलिए वैदिक ऋषियों, वैदिक शिक्षा व्यवस्था में चित्त की एकाग्रता के लिए यौगिक साधना पर भी बल दिया है। "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। इस सम्बन्ध में उनकी धारणा रही है कि बिना चित्त को एकाग्र किए व्यक्ति अपनी अवस्था में स्थित नहीं हो सकता। "तदा द्रष्टः स्वरूपेऽवस्थानम्" इस प्रकार मानसिक व्याधियों से छुटकारा प्राप्त करने हेतु भी वैदिक ऋषियों ने चित्त को योग के माध्यम से शान्त रखने की बात कही है। आज के समय में पर्यावरणीय संकट एक अति विनाशकारी संकट के रूप में सामने आया है। वस्तुतः इस संकट से तो जीव सभ्यता के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न खड़ा हो गया है।

आधुनिक काल का प्रारम्भ औद्योगीकरण व विज्ञानीकरण के साथ हुआ। इस समय प्रकृति के विदोहन में कई गुना तक वृद्धि हो गयी। प्राकृतिक घटक जो अब तक मात्र सुरक्षा एवं सम्बल की तरह देखे जाते थे, अब वे संसाधन के रूप में सम्पदा के स्रोत दिखने लगे क्योंकि विज्ञान इनके विदोहन के लिए नए संसाधन जुटा देता है तथा उद्योग इन्हें संशोधित कर सम्पदा का रूप दे देता है।

औद्योगिक

और प्रौद्योगिक क्रान्तियों के फलस्वरूप जिस भौतिकवादी संस्कृति का प्रादुर्भाव हुआ, उसकी वैचारिकी परिणति अचानक से अर्थवाद एवं उपभोक्तावाद में हो गयी। इन सब प्रक्रियाओं ने पर्यावरण प्रदूषण को जन्म दिया। विज्ञान के माध्यम से मानव ने वस्तुजगत के रूपान्तरण की जो प्रविधि विकसित की उससे न केवल वस्तु का रासायनिक परिवर्तन हुआ अपितु रासायनिक उच्छिष्ट के रूप में एक नया संकट भी खड़ा हो रहा है। सही मायने में भौतिक, जैविक एवं रासायनिक स्तर पर इतना तीव्र परिवर्तन होने से समस्त पृथ्वी ही भौगोलिक पारिस्थितिकीय असन्तुलन से ग्रस्त हो जाती है।

इन सब बातों के परिप्रेक्ष्य में यह महत्वपूर्ण है कि हम मानव तथा प्रकृति के मध्य सम्बन्धों की स्थिति को जाने। वैदिक वाङ्मय का सम्पूर्ण वातावरण ही प्रकृति से आप्लावित है। वेदों के रचयिता, मन्त्रद्रष्टा ऋषियों का परिवेश, परिधान, भोजन, दिनचर्या इत्यादि सभी प्राकृतिक है। उनके देवता भी प्राकृतिक है। उनके लिए पृथ्वी माता है, पर्जन्य पिता है, सूर्य आत्मा हैं, जल व वनस्पतियाँ मित्र हैं।

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ।

पर्जन्यः पिता स उ न पिपतु ॥

(अथर्ववेद 12/1/2)

यह साधारण मन्त्र ऋषियों की प्रकृति के प्रति गहरी आत्मीयता को प्रकट करता है। अधिकांश प्रकृतिक पर मन्त्र ऐसे ही सरल भावों से भरे हैं जिनमें प्रकृति के प्रति समर्पण एवं उससे समन्वय का संगीत स्वर गुंजित होता रहता है। वैदिक वाङ्मय में प्रकृति के प्रति प्रतिबद्धता को हम सर्वाधिक सशक्त रूप में 'ऋत' के सिद्धान्त में पा सकते हैं। वैदिक युग में ऋत, सत्य का ऐसा रूप है जो नैतिक एवं प्राकृतिक जगत में समानान्तर रूप में प्रवाहित है। मानव की सत्यनिष्ठा प्रज्ञा को 'ऋतम्भरा' कहा गया है तथा प्रकृतिचक्र की विधायिका विभाजिका को 'ऋतु' की संज्ञा दी गयी है। यहाँ पर आकर नैतिक व प्राकृतिक जीवन में पूर्ण तादात्म्य हो जाता है।"

इस प्रकार से यदि हम बच्चों में वैदिक शिक्षा का प्रवाह करते हैं तो निश्चित रूप से इन श्रेष्ठ सिद्धान्तों के आधार पर वे प्रकृति का भी स्वतः साध्य मूल्य समझ पाएँगे तथा आगे आने वाले समय में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का भाव रखते हुए एवं संपोषणीय विकास को ध्यान में रखते हुए विकास पथ पर अग्रसर होंगे। इस संदर्भ में एक और बात रेखांकित करने योग्य है कि पर्यावरण का संकट केवल विकास से ही नहीं, बल्कि अविकास से भी जुड़ा है। पर्यावरणीय हास के लिए तीव्र औद्योगिक विकास ही नहीं, ग्रामीण विकास का अभाव भी उत्तरदायी है। कृषि के लिए होने वाला वृक्ष विनाश तथा जल विदोहन औद्योगिक विकास से होने वाली इस क्षति की तुलना में काफी अधिक था।

अब प्रश्न है कि वर्तमान में वैदिक शिक्षा का स्वरूप क्या हो? क्या पूर्णतया वैदिक शिक्षा एवं पद्धति को वर्तमान में लागू किया जा सकता है? स्पष्टतः इसका निषेधात्मक उत्तर ही होगा। वर्तमान में शिक्षा एवं पद्धति को गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के आधार पर देना सम्भव नहीं है परन्तु प्रारम्भिक स्तर से ही शिक्षा के पाठ्यक्रम में वैदिक वाङ्मय के महत्वपूर्ण शिक्षाओं को सम्मिलित करना काफी लाभदायक रहेगा। बच्चों में सैद्धान्तिक शिक्षा प्रदान करने के साथ ही साथ उसका व्यवहारिक अनुप्रयोग भी जीवन के सर्वांगीण विकास की महत्वपूर्ण कड़ी है। यह विशेषता वैदिक शिक्षा प्रणाली का आधार रही है। वैदिक पद्धति में वर्णित यौगिक क्रिया, नैतिक विचार, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता की भावना, धर्म का स्वरूप, राष्ट्रवाद की भावना इत्यादि को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाकर प्रारम्भ से ही बच्चों का बाह्य तथा आन्तरिक दोनों विकास करना वर्तमान शिक्षा पद्धति का लक्ष्य होना चाहिए तथा वैदिक शिक्षा का वर्तमान में इस रूप में सदुपयोग किया जा सकता है। जैसा कि डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा— "एक सभ्यता का निर्माण ईंटों, इस्पात तथा मशीनरी से नहीं होता। यह मानवों से एवं उनके चरित्र व विशेषता से निर्मित होती है। अतः शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य शरीर एवं आत्मा में समस्त सुन्दरता एवं पूर्णता का विकास करना है।

1.1.4 शोध अध्ययन के उद्देश्य :

1 वर्तमान शिक्षा प्रणाली के परिपेक्ष में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

- 2 वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली के तत्वों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उपयोगिता का अध्ययन करना ।
- 3 वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली का वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में शिक्षाविदों के विचार का निम्नलिखित के परिपेक्ष में अध्ययन करना ।
 - शिक्षा के उद्देश्य ,
 - पाठ्यक्रम
 - शिक्षण विधि ,
 - गुरु शिष्य संबंध
4. वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली की संरचना और तकनीक का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता का विश्लेषण करना ।
5. वैदिक काल में शिक्षक व शैक्षणिक संस्थाओं के स्वरूप का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता का अध्ययन करना ।
6. वैदिक कालीन शिक्षा में शैक्षणिक मूल्य का अध्ययन करना ।
7. वैदिक कालीन शिक्षा के उद्देश्यों और उसके प्रभाव का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता का अध्ययन करना ।
8. वर्तमान शिक्षा प्रणाली का वैदिक कालीन शिक्षा में तुलनात्मक अध्ययन करना ।
9. वैदिक काल से स्वतंत्रता प्राप्ति पूर्व काल तक के भारतीय शिक्षण प्रणाली में पाठ्यक्रमों और जीवन कौशलों को ज्ञात करना ।
10. वर्तमान भारतीय शिक्षण प्रणाली में पाठ्यक्रमों और जीवन कौशलों को ज्ञात करना ।
11. जीवन कौशल शिक्षा और पाठ्यक्रमों की प्रकृति के प्रभावों का अध्ययन करना ।
12. वैदिक काल से वर्तमान तक की शिक्षा प्रणाली की कमियों और गुणों का अध्ययन करना ।
13. वैदिक काल से वर्तमान तक की शिक्षा प्रणाली में जीवन कौशल तथा पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

1.1.5 – शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

- 1 वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली वर्तमान शिक्षा प्रणाली से समन्वय रखती है ।
- 2 वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उपयोगिता रखती है ।
- 3 वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में शिक्षाविद् सकारात्मक विचार रखते हैं ।

- 4 वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में शिक्षामित्र सकारात्मक विचार रखते हैं।
- 5 वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता रखती है।
6. वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रमों का सकारात्मक प्रभाव पाया जाता है।
7. वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली के जीवन कौशलों का सकारात्मक प्रभाव पाया जाता है।
8. वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रमों का सकारात्मक प्रभाव पाया जाता है।

1.1.6 शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

वैदिक शिक्षा प्रणाली

वैदिक शिक्षा अर्थात् वेदों के अनुसार शिक्षा का अर्थ ज्ञान अथवा विद्या की प्राप्ति है। वेदों के आधार पर शिक्षा ज्ञान, आत्मा व ब्रह्म की खोज है। शिक्षा का उद्देश्य आत्मानुभूति व आत्मबोध है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली

वर्तमान शिक्षा प्रणाली से तात्पर्य है, कुछ सीखकर अपने को पूर्ण बनाना। इसी दृष्टि से शिक्षा को मानव-जीवन की आँख भी कहा जाता है। वह आँख जो मनुष्य को जीवन के प्रति सही दृष्टि प्रदान कर उसे इस योज्य बना देती है कि वह भला-बुरा सोचकर प्रगतिशील कार्य कर सके।

शब्द कुंजी-

माध्यमिक, उच्च शिक्षा स्तरीय विद्यार्थी, अभिवृत्ति, जीवन कौशल

1.1.7 शोध का परिसिम्न

प्रस्तुत शोध अध्ययन वैदिक कालीन अध्ययन व्यवस्था की वर्तमान शिक्षा के संदर्भ में प्रासंगिकता का विश्लेषण करने तक सीमित रहा।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के परिपेक्ष में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का अध्ययन करने पर प्राप्त नतीजे दिखा रहा है की कक्षा 5 से 12वीं तक के छात्रों के लिए वर्तमान पाठ्यक्रम में वैदिक शिक्षा के तत्वों को शामिल करने से उनके समग्र विकास, शैक्षिक प्रदर्शन, सांस्कृतिक समझ और जीवन कौशल में सकारात्मक परिणाम होंगे ।

1.1.8 शोध अध्ययन की परिसीमाएं –

प्रस्तुत शोध अध्ययन— वर्तमान शिक्षा के संदर्भ में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का अध्ययन विश्लेषण अपने आप में एक विस्तृत क्षेत्र है। अतः शोधकर्ता के समय एवं संसाधनों को देखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन का सीमांकन अति आवश्यक है। जिससे शोधार्थी अपने शोध अध्ययन के निर्दिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें। वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था एवं वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के बीच प्रासंगिकता का विश्लेषण, विवेचन, तुलना एवं समीक्षा को इस अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित किया गया है। शोधार्थी का अध्ययन विषय क्षेत्र शिक्षा शास्त्र से सम्बन्धित है। इसलिए शोधार्थी द्वारा वैदिक कालीन संस्कृति— जैसे— राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति पर सीमित रूप में प्रकाश डाला गया है।

1.1.9 शोध के चर –

इस शोध में दो प्रकार के चरों को लिया गया है जो इस प्रकार से है

स्वतन्त्र चर —इस शोध में शिक्षण विधियों स्वतंत्र चर के रूप में है। शिक्षण विधियों में प्राचीन और आधुनिक शिक्षण विधियां है।

वैदिक, उत्तरवैदिक, मध्यकाल, ब्रिटिश काल और आधुनिक शिक्षा पद्धति

(ब) आश्रित चर — आश्रित चर के रूप में विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम और जीवन कौशल का चयन कर अध्ययन किया गया है। शिक्षकों और अभिभावकों की वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति अध्ययन किया गया है।

1.1.10 शोध अध्ययन विधि का सीमांकन :

प्रस्तुत अध्ययन में केवल कक्षा 5 से 12वीं तक के माध्यमिक, उच्च शिक्षा स्तरीय विद्यालयों को ही शामिल किया गया है।

‘ प्रस्तुत अध्ययन में केवल पंजाब सरकार द्वारा संचालित माध्यमिक, उच्च शिक्षा स्तरीय विद्यालयों को ही शामिल किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में केवल पटियाला जिला के जनपद समाना में संचालित माध्यमिक, उच्च शिक्षा स्तरीय विद्यालयों को ही शामिल किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु चयनित माध्यमिक, उच्च शिक्षा स्तरीय विद्यालयों विद्यार्थियों से सम्बन्धित शिक्षकों को ही शोध अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु चयनित माध्यमिक, उच्च शिक्षा स्तरीय विद्यालयों विद्यार्थियों से सम्बन्धित अभिभावकों को ही शोध अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में स्वयं निर्मित प्रश्नावली के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का अभिमत एवं साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा शिक्षाविदों के विचार जानने का प्रयास किया गया है

1.1.11 जनसंख्या

शोध में पटियाला जिला ,पंजाब के माध्यमिक, उच्च शिक्षा स्तरीय विद्यार्थियों, सम्बन्धित शिक्षकों ,सम्बन्धित अभिभावकों, शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों, एवं शिक्षाविदों को जनसंख्या के रूप में चुना गया है।

1.1.12 न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सम्बन्धित जनपद के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक, उच्च शिक्षा स्तरीय विद्यालयों में से शोध में 100 माध्यमिक, –100 उच्च शिक्षा स्तरीय विद्यार्थियों का चयन अदैव निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया है। इसमें 100 माध्यमिक, उच्च स्तरीय विद्यार्थियों के एक समूह को नवीन शिक्षा प्रणाली से अध्ययन करवाया गया है। और दूसरे 100 माध्यमिक, उच्च स्तरीय विद्यार्थियों को प्राचीन शिक्षा प्रणाली से अध्ययन करवाया गया है। तथा सम्बन्धित जनपद के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक, उच्च शिक्षा स्तरीय विद्यालयों में से कुल 100 शिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों, एवं शिक्षाविदों तथा 100 अभिभावकों को चुना गया है जिसमें पुरुष एवं महिला अध्यापक तथा अभिभावक सम्मिलित है।

क्र सं	समूह	संख्या				
			महिला	पुरुष	शहरी	ग्रामीण
01	छात्र	200	95	105	110	90
02	शिक्षक	100	45	55	42	58
03	अभिभावक	100	43	57	60	40

1.1.13 सांख्यिकी

शोध में ऐतिहासिक तुलनात्मक अध्ययन हेतु विश्लेषणात्मक विधि का उपयोग करने के साथ ही प्राथमिक तथ्यों के विश्लेषण हेतु सहसंबंध, टी टेस्ट, मध्यमान और मानक विचलन विधियों का उपयोग किया गया है।

1.1.14 मेथाडोलॉजी या शोध पद्धति

1. प्राथमिक स्रोतों का अध्ययन : प्राचीन शास्त्रों जैसे कि वेद उपनिषद् गीता और आध्यात्मिक ग्रन्थों का विश्लेषण किया गया। ताकि वैदिक कालीन शिक्षा के सिद्धांतों और अवधारणाओं को वर्तमान शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता में अध्ययन किया जा सके।

2. ऐतिहासिक अध्ययन: वैदिक काल में शिक्षा के प्राचीन प्रणालियों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता में ऐतिहासिक अध्ययन किया गया।।

3. सामाजिक संदर्भ: वैदिक समाज में शिक्षा का स्थान और उसका प्रभाव उसे समय के सामाजिक संरचना के साथ जोड़ा गया।

4. तुलनात्मक अध्ययन : वैदिक शिक्षा प्रणाली को वर्तमान शिक्षा प्रणाली के साथ तुलना किया गया। ताकि उसके अंतर का पता चल सके।

5. आधुनिक दृष्टिकोण: वैदिक शिक्षा के सिद्धांतों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ किस प्रकार संबंधित किया जा सकता है इस पर विचार किया गया।

1.1.15. अनुसंधान अध्ययन नियोजन ६ विधि:

2. प्रतिभागी चयन: अध्ययन में विभिन्न स्कूलों के छात्रों को शामिल किया गया। जो विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग जनसंख्याकी रूपरेखा को कर करते हैं पांचवी से 12वीं ग्रेड की कक्षाओं के साथ स्कूलों का चयन किया गया।

2. पूर्व मूल्यांकन : वैदिक तत्वों को पाठ्यक्रम में शामिल करने से पहले छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन ज्ञान दक्षता भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सांस्कृतिक जागरूकता को मापने के लिए मूल्यांकन किया गया।

3. पाठ्यक्रम एकीकरण: पाठ्यक्रम में वैदिक काल के शिक्षा तत्व जैसे कि वैदिक गणित योग ध्यान प्राचीन पाठ्यक्रम के माध्यम से नैतिक शिक्षा और संस्कृत भाषा की अध्ययन को अन्य विषयों में एकीकृत किया गया।

4. **अध्ययन की अवधि:** अध्ययन एक शैक्षिक वर्ष को आवरित किया गया। ताकि वैदिक शिक्षा तत्वों के एकीकरण के दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन किया जा सके।
5. **देखरेख दृनिगरानी (कैरेबियन मॉनिटरिंग):** एकीकृत पाठ्यक्रम का उचित कारण व्यंजन और सामने आने वाली किसी भी चुनौतियों का समाधान करने के लिए शिक्षकों छात्रों और माता-पिता के साथ नियमित मॉनिटरिंग और प्रतिक्रिया सत्र आयोजित किए किया गया।
6. **पोस्टमूल्यांकन:** शैक्षिक वर्ष के अंत में छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन ज्ञान दक्षता भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सांस्कृतिक समझ में वैदिक शिक्षा एकीकरण के प्रभाव को मापने के लिए एक विस्तृत मूल्यांकन किया किया गया।
7. **डेटा विश्लेषण:** प्रयोग मूल्यांकन के प्रारंभिक और पोस्ट मूल्यांकन परिणाम को तुलनात्मक विश्लेषण के लिए अंकरात्मक वीडियो का उपयोग किया जाएगा उपभोक्ताओं की अवधारणाओं चुनौतियों और लबों की आंतरिक प्रतिक्रिया को समझने के लिए भौतिक डाटा को थेमेटिक रूप में विश्लेषित किया किया गया।

उपकरण

जीवनकौशल अभिवृत्ति मापन हेतु स्वनिर्मित मापनी का उपयोग किया गया है इस आयु वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन कौशल आंकलन के लिए हिंदी भाषा में कोई परीक्षण उपलब्ध न हो पाने के कारण शोधकर्त्री ने इस परीक्षण का निर्माण किया। इस प्रमापनी का निर्माण प्रयोग आरंभ करने से पूर्व और प्रयोग पश्चात विद्यार्थियों के जीवन कौशल का मापन करने के उद्देश्य से किया गया। प्रारंभ में प्रमापनी में कुल 42 स्वीकारोक्तियों का निर्माण शोधकर्त्री द्वारा किया गया। जिसे तीन विषय विशेषज्ञों के पाल्स मूल्यांकन हेतु भेजा गया। उनके द्वारा बताये गये सुझावों के आधार पर और पद परीक्षणों द्वारा अंत में कुल 35 स्वीकारोक्तियों के आधार पर विद्यार्थियों की जीवन कौशल का निर्धारण किया गया। इन 35 कथनों को निम्न 3 पर्ने (आयामों) में विभक्त किया गया है। इस प्रमापनी में 15 सकारात्मक और 2 नकारात्मक प्रश्न 5 विकल्पों के साथ बनाये गये।

सन्दर्भ सूची

1. feJk] uafnrk vkSj ,sFky] JhJkeuA ¼2023½ çkphu Hkkjrh; f'k{kk: vk/kqfud f'k{kk ç.kkyh esa bldh çklafxdrk vkSj egRoA fctusl] vkbZVh vkSj f'k{kk esa dsl LVMht ds varjkZ"Vªh; tuZyA 238&249- 10-47992 / vkbZtslh,lchbZ- 2581-6942-0271A

2. fiYybZ] egky{eh ¼2023½A losZ{k.k vuqla/kku: oSfnd cuke vk/kqfud f'k{kk ç.kkyhA 10-13140 / vkjth-2-2-18275-94244A
3. diwj] jkf/kdk ¼2021½ çkphu dky esa f'k{kk ds ewy fl)kar vkSj fo'ks"krk,aA
4. pkyqD;] ch-- ¼2020½ orZeku ;qx esa çkphu oSfnd f'k{kkA
5. ;kno]mfeZyk- ¼2018½ çkphu ,oa orZeku f'k{kk ç.kkyh dk rqyukRed v/;;uA f'k{kk] fLFkjr vkSj lektA 01&03- 10-26480 / ess- 01-2018-01-03-
6. अग्रवाल एवं पाण्डेय, सामाजिक शोध, आगरा बुक स्टोर, वर्ष 1987, पृष्ठ सं. 454
7. जैन,बी.एम. रिसर्च मैथ्योडोलॉजी रिचर्स पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण पृष्ठ सं.225
8. शिक्षा और समाज : सुभाष वर्मा, पृ. 40
9. शिक्षा में बदलाव का सवाल : अनिल सगोपाल, पृ. 121